Dr. Kumari Priyanka

Department of history

H.D jain college, ara

Notes for B. A part 3

Topic :- अलाउद्दीन खिलजी के जीवन के प्रारंभिक कठिनाइयों का वर्णन करें

अलाउद्दीन खिलजी के जीवन की प्रारंभिक कठिनाइयाँ

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) का प्रारंभिक जीवन संघर्षों और कठिनाइयों से भरा था। उसके सुल्तान बनने से पहले उसे कई व्यक्तिगत, पारिवारिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

1. परिवार और सत्ता संघर्ष

अलाउद्दीन का असली नाम अली गुरशास्प था और वह जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-1296) का भतीजा और दामाद था। उसके पिता शाहबुद्दीन मसऊद एक साधारण अधिकारी थे, और अलाउद्दीन का पालन-पोषण कठिन परिस्थितियों में हुआ। जलालुद्दीन खिलजी ने उसे गोद लिया और अपनी बेटी से विवाह करवा दिया, लेकिन परिवार में उसका प्रभाव सीमित था।

2. चाचा जलालुद्दीन खिलजी से असंतोष

अलाउद्दीन शुरू से ही महत्वाकांक्षी था, लेकिन उसके चाचा और ससुर जलालुद्दीन खिलजी उसे पूरी तरह से भरोसेमंद नहीं मानते थे। जलालुद्दीन की नीतियाँ उदार और कोमल थीं, जबकि अलाउद्दीन एक सख्त और शक्तिशाली शासक बनने की इच्छा रखता था।

3. घरेलू जीवन की समस्याएँ

अलाउद्दीन की पत्नी जलालुद्दीन की बेटी थी, लेकिन उसका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं था। उसकी पत्नी अत्यधिक ईर्ष्यालु और कठोर स्वभाव की थी। यह पारिवारिक तनाव उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के लिए एक बाधा बन गया था।

4. आर्थिक कठिनाइयाँ और विद्रोह की योजना

अलाउद्दीन को अपने सैनिकों और समर्थकों को बनाए रखने के लिए धन की आवश्यकता थी। उसने इस उद्देश्य से 1292 ई. में देवगिरि (महाराष्ट्र) पर हमला किया और वहाँ से भारी मात्रा में धन लूटा। यह आर्थिक संकट से उबरने की उसकी पहली बड़ी सफलता थी।

5. जलालुद्दीन की हत्या और सत्ता संघर्ष

जब अलाउद्दीन ने देवगिरि से लौटने के बाद अपनी शक्ति बढ़ानी शुरू की, तो जलालुद्दीन खिलजी को संदेह हुआ। उसने अलाउद्दीन को दंडित करने की योजना बनाई, लेकिन अलाउद्दीन ने पहले ही एक साजिश के तहत 1296 ई. में कड़ा (प्रयागराज) में अपने चाचा की हत्या कर दी और दिल्ली की सत्ता पर अधिकार कर लिया।

निष्कर्ष

अलाउद्दीन खिलजी का प्रारंभिक जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से भरा था। उसे पारिवारिक कलह, आर्थिक संकट, राजनीतिक संदेह और सत्ता संघर्ष का सामना करना पड़ा। लेकिन अपनी महत्वाकांक्षा, कूटनीति और सैन्य कौशल के कारण वह धीरे-धीरे इन कठिनाइयों को पार कर सुल्तान बना और दिल्ली सल्तनत के सबसे शक्तिशाली शासकों में गिना जाने लगा।